09-10-26 VNS PG-6 EDITORIAL.qxd 08-10-2026 19:37 Page 1

नाविकोंपर हमले

काला सागर अब केवल रूस-यूक्रेन युद्धका सैन्य मोरचा नहीं रह गया है, बल्कि यह वाणिज्यिक जहाजरानीके लिए गम्भीर जोखिम वाला समुद्री क्षेत्र बनता जा रहा है, जो पूरे विश्वके लिए चिन्ताका विषय है। वाणिज्यिक जहाजोंको निशाना बनाया जा रहा है। पिछले ४८ घण्टोंके दौरान चार जहाजोंको निशाना बनाया गया। रूसके समुद्री रिसार्ट शहर सोचीके पास लाइबेरियाई झण्डे वाले तेल टैंकरपर ड्रोन बोटोंसे हमले किये गये। इस टैंकरपर सवार चालक दलके सभी २३ सदस्य भारतीय नाविक थे। इन सभीको रूसी अधिकारीने सुरक्षित निकालकर तटपर पहुंचा दिया, अन्यथा इनकी जान जोखिममें फंस जाती। राहतकी बात यह है कि हमलेमें किसीको चोटें नहीं आयीं। भारतने वाणिज्यिक जहाजों और नाविकोंको निशाना बनाये जानेपर गम्भीर चिन्ता जतायी है और स्पष्टत: कहा है कि नाविक समुदायपर हमले कदापि बर्दाश्त नहीं किये जायंगे। परराष्ट्र मंत्रालयका यह कहना महत्वपूर्ण है कि विवादोंका समाधान कूटनीति और संवादके माध्यमसे होना चाहिए। हमलेके बाद इस टैंकरमें आग लग गयी और काला सागरके पानीमें तेल फैल गया। आगकी तीव्रता बहुत ही अधिक थी। यह घटना छह अक्तूबरकी है। रूसी अधिकारियोंने स्वीकार किया है कि मानवरहित नौ सैनिक पोतोंसे हमला किया गया, जिसके कारण टैंकरमें आग लगी। अग्निशमन दलके लिए जहाजके पास पहुंचनेमें काफी परेशानी उठानी पड़ी। यह घटना इस बातका प्रमाण है कि युद्ध क्षेत्रके निकट काम कर रहे भारतीय समुद्री कर्मचारियोंके समक्ष कितना बड़ा जोखिम पैदा हो चुका है। काला सागर पूरी तरहसे असुरक्षित बन गया है। रूस-यूक्रेन युद्धके कारण समुद्री सुरक्षा व्यवस्था काफी प्रभावित हुई है। काला सागरका जोखिम केवल किसी एक देशके तट या किसी खास समुद्री मार्गतक सीमित नहीं है। भारतीय नाविकोंके लिए यह काफी चिन्ता बढ़ाने वाली घटना है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि भारत नाविक पूरे विश्वमें समुद्री व्यापारमें बड़ी भूमिका निभाते हैं। युद्ध प्रभावित समुद्री मार्गोंपर भारतीय नागरिकोंकी मौजूदगीके कारण किसी भी हमलेका सीधा मानवीय और कूटनीतिक प्रभाव भारतपर पड़ सकता है। यह जहाजोंकी सुरक्षा व्यवस्थाको कटघरेमें खड़ा करता है। इसका अन्तरराष्ट्रीय व्यापारपर भी प्रभाव पड़ रहा है। असुरक्षा बढ़नेसे अनेक आर्थिक परिणाम हो सकते हैं। विशेष चिन्ता यह है कि व्यापारिक जहाजों और सैन्य लक्ष्योंके बीचकी सीमा युद्धमें धुंधली होती जा रही है। भारतके सामने अनेक चुनौतियां है, जिनका समाधान अत्यन्त आवश्यक है।

फल-सब्जीकी शुद्धता संदिग्ध

आजके दौरमें मिलावटी और अशुद्ध खाद्यान्नोंसे पटा बाजार न केवल मानव जीवनपर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है, बल्कि तरह-तरहकी बीमारियोंको भी दावत दे रहा है। दिक्कत यह है कि उपयोगकर्ताको न तो इसकी परख है, न ही जानकारी। इसके चलते लोग स्वास्थ्यवर्धक फलों और सब्जियोंकी जगह घातक रसायनोंका सेवन कर रहे हैं। लोकल सर्कल्सके देशव्यापी सर्वेमें जो खतरनाक तस्वीर उभरकर सामने आयी है, वह न सिर्फ गम्भीर चिन्ताका विषय है, बल्कि पैसेके लोभमें मानवीय मूल्योंके प्रति कारोबारियोंके चारित्रिक पतनकी सीमाको भी रेखांकित करती है। अभीतक तो मिलावटी खाद्यान्न, तेल-घी, मसालेकी परेशानीके सबब बने हुए थे लेकिन अब फल और सब्जियां भी स्वास्थ्यके लिए सुरक्षित नहीं हैं। देशमें लगातार रसायनोंके जरिये फलोंको पकाने और उनको रंगनेके मामले सामने आ रहे हैं, जो स्वास्थ्यके लिए हानिकारक है। नागरिकोंको यह पता नहीं जो फल-सब्जियां वे खा रहे हैं, वे कितनी शुद्ध हैं। सर्वेके अनुसार दो-तिहाई देशवासी इस बातसे अनभिज्ञ हैं कि जो फल और सब्जियां वे खरीद रहे हैं, वे रसायनोंसे पकाये और रंगे गये हैं। वे सिर्फ बाहरी आवरण देखते हैं, जो सुन्दर, चिकने और पके हुए दिखते हैं। यह महज धोखेके अलावा और कुछ नहीं है। अभी लगभग दो महीने पूर्व अगस्तमें कर्नाटकके खाद्य सुरक्षा अधिकारियोंने उडुपी जिलेमें दस हजार किलोग्रामसे अधिक केला जब्त किया था जिसे रसायनके इस्तेमालसे पकाया गया था और रंगा भी गया था। इस छापेमें रसायन भी पकड़ा गया था। इसी तरह आमके सीजनमें बड़ी मात्रामें कृत्रिम रूपसे आम भी पकाये जाते हैं और पकड़े भी जाते हैं। यह अक्षम्य अपराध है, क्योंकि यह लोगोंके स्वास्थ्यसे जुड़ा मामला है। इनके विरुद्ध कड़ी काररवाई की जानी चाहिए जो दूसरोंके लिए सबक बने। सरकारको भी प्राकृतिक रूपसे पके फल, बिना मिलावट उत्पादोंकी उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए और लोगोंको भी जागरूक करनेकी जरूरत है।

लोक संवाद

बीमारियोंसे बचें

महोदय,- जब मौसम बदलता है तो शरीरको नयी परिस्थितियोंके अनुरूप ढलनेमें समय लगता है। इस दौरान हमारी इम्युनिटी कमजोर हो सकती है, जिससे संक्रमणका खतरा बढ़ सकता है। तापमानमें बदलाव, हवामें नमी और प्रदूषणका स्तर घटने या बढ़नेसे हमारी प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है। इसलिए बदलते मौसममें सेहतका ध्यान रखना बहुत जरूरी है।बदलते मौसममें सेहतका ख्याल रखना बेहद आवश्यक होता है, क्योंकि इस दौरान तापमानमें बार-बार बदलाव होता है। ऐसेमें बुखार आना, गलेमें खराश, खांसी होना, जुकाम जैसे मामले काफी ज्यादा देखनेमें आते हैं। सितंबर मानसूनका आखिरी महीना है और अब धीरे-धीरे दिन सर्दियोंकी तरफ बढ़ रहे हैं। ऐसेमें जरूरी है कि आप अपनी सेहतपर ध्यान दें, ताकि मौसमी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओंसे बचे रहें। जानिये बदलते मौसममें हमारी बॉडीमें क्या बदलाव आते हैं और किन बातोंको ध्यानमें रखकर, इस दौरान होने वाली हैल्थ प्रॉब्लमसे बचा जा सकता है। अभी धूप खिली है और अचानक बादल आनेके साथ तेज हवाएं सर्दी बढ़ा दें, साथ ही बारिशसे मौसममें नमी भी बढ़ जाय तो इसका सेहतपर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। आपको भी यदि इस समय गलेमें खराश, खांसी, जुकाम जैसी समस्याएं परेशान कर रही हैं तो जान लें इसकी वजह और बचावके तरीके। बदलते मौसममें तापमान और वातावरणमें नमी होने जैसे बदलावोंके कारण शरीरमें कफ और वातका संतुलन प्रभावित हो सकता है, जिससे सुबहके समय गला सूखने, खराश या खांसी जैसी शिकायत हो सकती है। सूखी हवा भी गलेका सूखापन बढ़ा सकती है। कोशिश करनी चाहिए कि कमरेका तापमान सही रहे और हमेशा नाकसे ही सांस खींचने-छोड़नेकी आदत डालनी चाहिए। बदलते मौसममें दिखाई देने वाले हल्के-फुल्के लक्षणों (जैसे गलेमें खराश होना, गला सूखना) में पर्याप्त मात्रामें गुनगुना पानी पीना चाहिए। इसके अलावा सुबह उठकर भाप लेनेसे भी आपको राहत महसूस होती है। आप रातमें सोनेसे पहले भी भाप ले सकते हैं। इससे कफको हटानेमें मदद मिलती है और आप बढ़िया नींद ले पाते हैं। यदि खांसी लगातार बनी रहे, सांस लेनेमें परेशानी हो या बुखार जैसे लक्षण हों तो ऐसेमें सावधानियां बरतनेके साथ ही डाक्टरसे जांच करानी चाहिए ताकि आप सही ट्रीटमेंट ले सकें। मरीजको बच्चोंसे दूर रखना चाहिए, क्योंकि उनकी इम्युनिटी कमजोर होती है और इस दौरान वायरल हैल्थ प्रॉब्लम एकसे दूसरेमें पहुंच सकती है। मौसममें खान-पानका ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि इसीसे इम्युनिटी मजबूत होती है। हमेशा घरपर बना ताजा और हल्का, जल्दी पचने वाला खाना खायें, क्योंकि इस दौरान पाचन भी धीमा हो जाता है। बाहरकी चीजों (खासकर जंक फूड), ज्यादा फैट वाले फूड्स और पैक्ड फूडसे दूरी बनानी चाहिए। अपने खानेमें अदरक, लहसुनए जीरा, अजवायन, हल्दी आदिका उपयोग करें। ये मसाले औषधीय गुणोंसे भरपूर होते हैं। दिनभरमें पर्याप्त मात्रामें पानी पीते रहें। कोशिश करें कि नॉर्मल टेंप्रेचर या फिर गुनगुने पानीको ही पियें। **-प्रिया यादव, वाया ईमेल।**

विदेशी पूंजीकी अहमियत

रिजर्व बैंक आफ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ोंके मुताबिक २५ सितंबरतक भारतका विदेशी मुद्रा भंडार ७४७.६ अरब डालरके स्तरपर पहुंचते हुए भारतीय अर्थव्यवस्थाके लिए मजबूत आर्थिक सुरक्षा कवच बन गया है। भारत दुनियामें चीन, जापान और स्विट्जरलैंडके बाद चौथा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार रखने वाला देश बन गया है।

❐ डा.जयंती लाल भंडारी

भारत दुनियामें चीन, जापान और स्विट्जरलैंडके बाद चौथा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार रखने वाला देश बन गया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि पिछले माह १२-१३ सितंबरको नयी दिल्लीमें आयोजित १८वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलनके बाद ब्रिक्स देशोंसे भारतमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़नेकी संभावनाएं बढ़ी हैं। इस बार ब्रिक्स शिखर सम्मेलनमें यूएई और सऊदी अरब जैसे देशोंकी उपस्थितिसे भारतके बुनियादी ढांचे, ऊर्जा और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टरमें बड़े पैमानेपर निवेश आनेकी उम्मीद है। इस शिखर सम्मेलनके दौरान ब्रिक्स देशोंके बीच कृषि, तकनीक और वित्त क्षेत्रोंमें आपसी साझेदारी बढ़ानेपर जोर दिया गया है, जिससे भारतमें प्राइवेट सेक्टरके निवेशको बढ़ावा मिलेगा। ब्रिक्सके विस्तारसे नये ब्रिक्स देशोंमें भारतीय सामान और सेवाओंके निर्यातके नये दरवाजे खुले हैं। इस सम्मेलनने वैश्विक आर्थिक सहयोग और कूटनीतिक प्रभावको मजबूत करनेमें अहम भूमिका निभायी है, जिससे वैश्विक निवेशकोंका भारतपर भरोसा बढ़ा है। इन सबसे भारतमें विदेशी निवेश बढ़ेगा। उल्लेखनीय है कि भारतका रिकॉर्ड विदेशी मुद्रा भंडार भारतके लिए कई दृष्टिकोणोंसे लाभप्रद है। यह वैश्विक अनिश्चितताओंके बीच देशको आर्थिक स्थिरता प्रदान करता है।



व्यापारको गति देनेके लिए चालू खातेपर रुपयेको पूरी तरहसे परिवर्तनीय बनाया गया तथा भारतीय शेयर बाजारमें विदेशी संस्थागत और पोर्टफोलियो निवेशकोंके लिए नियमोंको सरल किया गया। इन विभिन्न बहुआयामी प्रयासोंके बावजूद भारतमें टिकाऊ विदेशी पूंजी आकर्षित करनेके लिए कई ठोस सुधारोंकी आवश्यकता है। केवल बड़े घरेलू बाजार और उच्च विकास दरके भरोसे रहना पर्याप्त नहीं होगा। इसके लिए देशके नियामक ढांचे, कर प्रणाली और कानूनी तंत्रमें व्यापक बदलाव अनिवार्य हैं। दीर्घकालिक निवेशके लिए स्थिर नीतियां पहली प्राथमिक शर्त हैं।

अमेरिकी डालरके मुकाबले रुपयेमें आने वाले उतार-चढ़ावको नियंत्रित करनेके लिए रिजर्व बैंक इस भंडारका उपयोग करता है, जिससे भारतीय मुद्रा मजबूत बनी रहती है। चूंकि भारत अपनी जरूरतका अधिकांश कच्चा तेल आयात करता है, अतएव यह विशाल भंडार देशको १०-१२ महीनेसे अधिकके निर्बाध आयातके लिए वित्तीय सुरक्षा देता है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार विदेशी निवेशकोंको आकर्षित करता है, क्योंकि यह देशकी ऋण चुकानेकी क्षमता और वित्तीय मजबूतीको दर्शाता है। मजबूत आर्थिक स्थितिके कारण वैश्विक रेटिंग एजेंसियां देशकी क्रेडिट रेटिंग सुधारती हैं, जिससे भारतीय कम्पनियोंको अंतरराष्ट्रीय बाजारसे सस्ती दरोंपर कर्ज मिलता है। वैश्विक युद्ध, महंगी या अन्य देशोंके केन्द्रीय बैंकोंके फैसलोंसे उत्पन्न आर्थिक संकटोंको झेलनेमें विदेशी मुद्रा भंडार सुरक्षा कवचकी तरह मदद करता है। गौरतलब है कि हालमें जहां विभिन्न वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों-जापानी क्रेडिट रेटिंग एजेंसी (जेसीआर), एसएंडपी रेटिंग्स और फिच रेटिंग्सने भारतके विदेशी मुद्रा भंडारकी मजबूतीको रेखांकित किया है, वहीं भारतीय रिजर्व बैंककी विशेष डालर-रुपये विदेशी मुद्रा अदला-बदली (फॉरेक्स स्वैप) सुविधाके तहत अभूतपूर्व सफलताने वैश्विक वित्तीय जगतमें भारतकी आर्थिक साख और मजबूतीका एक नया अध्याय लिख दिया है। यह महत्वपूर्ण है कि ८ जून २०२६ को शुरू की गयी इस योजनाके प्रति अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) ने ऐसा अभूतपूर्व उत्साह दिखाया कि आरबीआईको अपने लक्ष्य समयसे पहले ही निर्धारित लक्ष्य हासिल हो गये। यह परिदृश्य बताता है कि भारतीय अर्थव्यवस्थाके प्रति वैश्विक स्तरपर निवेशकोंका भरोसा अटूट है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि गत १८ अगस्तको गजट अधिसूचनाके बाद लागू कराधान एवं अन्य कानून (संशोधन) अधिनियम २०२६ अब भारतमें विदेशी पूंजीको आकर्षित करने, कर व्यवस्थामें स्पष्टता लाने और घरेलू विनिर्माणको सुदृढ़ बनानेके परिप्रेक्ष्यमें अत्यंत अहम भूमिका निभायेगा। इसका मुख्य उद्देश्य भारतको वैश्विक पूंजी और व्यापारके लिए अधिक आकर्षक एवं भरोसेमंद गंतव्य बनाना है।

यह अपतटीय निवेश कोषों (ऑफशोर इन्वेस्टमेंट फंड्स) और फंड प्रबंधकोंके लिए नियमोंको सरल बनाता है, जिससे भारतसे परिचालन करने वाले कोष प्रबंधकोंको कर संबंधी जटिलताओंका सामना न करना पड़े। इससे वैश्विक केन्द्रोंमें कार्यरत भारतीय एवं विदेशी प्रबंधक सुगमतासे भारतकी ओर रुख करेंगे। इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्रके लिए उपकरण आपूर्तिपर मिलने वाली आयकर छूटको वर्ष २०४०-४१ तक विस्तारित किया गया है। सीमा शुल्क-बंधित (कस्टम्स-बाण्डेड) गोदामोंमें इलेक्ट्रॉनिक घटकोंके भंडारणको कर-मुक्त करने और डेटा सेंटरोंके लिए प्रक्रियाओंको सुगम बनानेसे वैश्विक कम्पनियां भारतमें बड़े पैमानेपर निवेशके लिए आकर्षित होंगी। इससे रोजगारके नये अवसर भी सृजित होंगे। यह भी उल्लेखनीय है कि २१ साल बाद यानी वर्ष २०४७ तक भारतको विकसित देश बनाने और लगभग ३०-३५ ट्रिलियन डालरकी अर्थव्यवस्था बनाने और प्रति व्यक्ति आय करीब १८००० डालर करनेके लिए बुनियादी ढांचे, तकनीक और विनिर्माण क्षेत्रमें भारी निवेशकी आवश्यकता है। इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके लिए भारतको लगातार औसतन करीब नौ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर बनाये रखनी होगी। इतने बड़े विकास लक्ष्यको अकेले घरेलू संसाधनोंसे पूरा करना संभव नहीं होगा, इसलिए विदेशी पूंजी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि आर्थिक सुधारोंके पिछले ३५ वर्षोंमें जो विदेशी मुद्रा भारतमें धीमी गतिसे आयी है, अब कराधान और अन्य कानून (संशोधन) अधिनियम २०२६ के लागू होनेके बाद भारतकी ओर विदेशी मुद्राके प्रवाहमें तेजी आनेकी पूरी संभावनाएं हैं। यदि हम भारतमें विदेशी पूंजी आकर्षित करनेके ऐतिहासिक प्रयासोंपर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि १९९१ के आर्थिक संकटके बाद तत्कालीन प्रधान मंत्री पीवी नरसिम्हा राव और वित्तमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा आर्थिक सुधारोंका नया दौर शुरू किया गया था।

तबसे अबतक विदेशी निवेशको आकर्षित करनेके लिए निरन्तर कई ठोस कदम उठाये गये हैं। बीमा, दूरसंचार और खुदरा (रिटेल) जैसे प्रमुख क्षेत्रोंमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की सीमा बढ़ाकर सौ प्रतिशततक कर दी गयी है। रक्षा क्षेत्रमें भी कुछ शर्तों और नियमोंके साथ सौ प्रतिशत एफडीआईकी अनुमति दी गयी है। अधिकांश क्षेत्रोंमें पूर्व-सरकारी अनुमतिके बिना (स्वचालित मार्गसे) निवेश करनेकी छूट प्रदान की गयी। पुराने और कठोर 'फेरा' (एफईआरए) कानूनको समाप्त कर लचीला 'फेमा' (एफईएमए) लागू किया गया जिससे विदेशी मुद्राका प्रवाह और लेनदेन आसान हो गया। देशको वैश्विक विनिर्माण केन्द्रके रूपमें स्थापित करने और विदेशी कम्पनियोंको आकर्षित करनेके लिए मेक इन इंडिया अभियान शुरू किया गया। निवेशकोंको करमें छूटए सरल नियम और आधुनिक बुनियादी ढांचा उपलब्ध करानेके लिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड)का विकास किया गया।

प्रमुख विनिर्माण क्षेत्रोंमें उत्पादन बढ़ाने वाली कम्पनियोंको वित्तीय प्रोत्साहन देनेके लिए उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) जैसी व्यवस्थाएं की गयीं। व्यापारको गति देनेके लिए चालू खातेपर रुपयेको पूरी तरहसे परिवर्तनीय बनाया गया तथा भारतीय शेयर बाजारमें विदेशी संस्थागत और पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के लिए नियमोंको सरल किया गया। इन विभिन्न बहुआयामी प्रयासोंके बावजूद भारतमें टिकाऊ विदेशी पूंजी आकर्षित करनेके लिए अब भी कई ठोस सुधारोंकी आवश्यकता है। केवल बड़े घरेलू बाजार और उच्च विकास दरके भरोसे रहना पर्याप्त नहीं होगा। इसके लिए देशके नियामक ढांचे, कर प्रणाली और कानूनी तंत्रमें व्यापक बदलाव अनिवार्य हैं। दीर्घकालिक निवेशके लिए स्थिर नीतियां पहली प्राथमिक शर्त हैं। कर नियमों, सीमा शुल्क और क्षेत्र-विशेषके प्रावधानोंमें अचानक होने वाले परिवर्तनोंसे निवेशक दूर भागते हैं।

कृतज्ञता अर्पित करनेका अवसर

श्राद्ध और तर्पण केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, स्मृति, कृतज्ञता और पीढ़ियोंसे मिले संस्कारोंको समझने की परम्परा है। हमारा व्यवहार, आदतें और जीनेके कुछ तरीके भी पिछली पीढ़ियोंसे हमतक पहुंचते हैं। यही भारतीय संस्कृति है।

❐ गणेश काला

विज्ञानके मुताबिक हमारी जैविक संरचनामें डीएनएकी अहम भूमिका है। हमें अपने माता-पितासे आनुवंशिक सामग्री मिलती है और इस तरह जैविक निरन्तरता पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। वहीं शोधोंमें सामने आया कि जीनकी अभिव्यक्तिपर माहौल, जीवनशैली और अनुभवोंका प्रभाव पड़ सकता है। इसे समझनेको एपिजेनेटिक्स अहम क्षेत्र है। यहींसे भारतीय परम्परामें पूर्वजोंके स्मरण एवं श्राद्ध-तर्पणको देखनेका नया रास्ता खुलता है। मानव शरीरका बड़ा हिस्सा जलसे बना है। भारतीय दर्शनने जलको पंचमहाभूतोंमें स्थान दिया। वहीं तर्पणमें जल अर्पित करनेमें गहरा सांस्कृतिक प्रतीक है-मैं अपने अस्तित्वकी उस धाराको स्वीकार करता हूं, जो मुझसे पहले भी थी और मेरे बाद भी आगे जायगी। जल अर्पित करते समय व्यक्ति पूर्वजोंका नाम लेता है। अपने अतीतको याद कर स्वीकार करता है कि उसका वर्तमान अकेले उसने नहीं बनाया। यह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक स्तरपर भी महत्वपूर्ण है। कई भावनाएं ऐसी होती हैं, जिन्हें हम व्यक्त नहीं कर पाते। किसी पूर्वजके प्रति कृतज्ञता, पुराने पारिवारिक दु:खकी याद या पीढ़ियोंसे चली आ रही अनकही कहानी-इन सबका हमारे मनपर प्रभाव हो सकता है। श्राद्ध व्यक्तिको उन भावनाओंको देखने और स्वीकार करनेका अवसर देता है। हम केवल अपना वर्तमान लेकर पैदा नहीं होते। हमारा व्यक्तित्व परिवार, समाज, संस्कार, वातावरण और अनुभवोंसे बनता है। परिवारमें पीढ़ियोंसे चली आ रही कुछ आदतें और व्यवहार भी अगली पीढ़ियोंमें दिख सकते हैं। लेकिन इसे सीधे यह कहना कि पूर्वजोंकी स्मृतियां डीएनएमें रिकॉर्ड होकर उसी रूपमें हमारे भीतर चलती हैं, वैज्ञानिक रूपसे सही नहीं होगा। डीएनए और व्यवहारके बीच संबंध कहीं अधिक जटिल है।

आनुवंशिकता, वातावरण और जीन-अभिव्यक्तिके अध्ययनने यह समझनेका रास्ता जरूर खोला है कि जीवनके अनुभव जैविक प्रक्रियाओंको प्रभावित कर सकते हैं। इसीलिए वैज्ञानिक पीढ़ियों के बीच जैविक और पर्यावरणीय प्रभावोंका अध्ययन करते हैं। इस दृष्टिसे पूर्वजोंके डीएनए पैटर्नकी हीलिंगको वैज्ञानिक सिद्ध तथ्यके बजाय एक विचारात्मक रूपकके रूपमें समझना अधिक उचित होगा। जल और भावनाओंके संबंधकी चर्चामें जापानी लेखक और शोधकर्ता मसारू इमोटोका नाम अक्सर लिया जाता है। हालांकि उनके निष्कर्षोंको मुख्यधाराके वैज्ञानिक प्रमाणके रूपमें स्वीकार नहीं किया जाता है। फिर भी भारतीय तर्पण परम्पराको समझनेमें जलका प्रतीकात्मक महत्व इससे कहीं पुराना है। भारतीय चिंतनमें जल केवल भौतिक पदार्थ नहीं, जीवन और चेतनाकी यात्राका प्रतीक भी रहा है। इसलिए तर्पणके समय जल अर्पित करनेको ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया मान सकते हैं, जिसमें व्यक्ति अपने अतीतके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं अपना वर्तमान उस परम्परासे जोड़ता है।

श्राद्धका सबसे बड़ा परिवर्तन शायद हमारे भीतर होता है। जब कोई श्रद्धासे अपने पूर्वजोंको स्मरण करता है तो वह स्वयं अपने जीवनको देखने लगता है कि जीवन केवल 'मैं' तक सीमित नहीं है। मेरे भीतर मेरे माता-पिता हैं। मेरे माता-पिताके भीतर उनके माता-पिताकी जीवन-कथा है। इस प्रकार मनुष्य स्वयंको एक लम्बी जीवन-शृंखलाकी कड़ीके रूपमें देख सकता है। यहीं श्राद्ध कृतज्ञताकी परम्परा बन जाता है। अद्वैत दर्शन भी कहता है कि अस्तित्व मूलत: विभाजित नहीं है। व्यक्ति स्वयंको अलग मानता है, लेकिन व्यापक अस्तित्वमें सब एक ही निरन्तरताका हिस्सा हैं। आधुनिक विज्ञानकी भाषा अलग है। विज्ञान पदार्थ और ऊर्जा, कोशिका, अणु, परमाणु, आनुवंशिकी और जैविक प्रक्रियाओंकी बात करता है। फिर भी दोनोंके बीच एक संवाद संभव है। ब्रह्मांडमें पदार्थ निरन्तर रूप बदलता है। पृथ्वीके तत्व हमारे शरीरका हिस्सा बनते हैं। भोजन शरीरमें जाता है। शरीर प्रकृतिमें लौटता है। जीवनकी जैविक निरन्तरता पीढ़ियोंके जरिये आगे बढ़ती है। भारतीय चिंतन इसी निरन्तरताको पंचमहाभूत, जीवन-चक्र और पूर्वज परम्पराकी भाषामें देखता रहा है। वैज्ञानिक प्रमाण यह नहीं कहते कि श्राद्ध या तर्पण करनेसे किसीका डीएनए सीधे बदल जाता है। इसी तरह तर्पणको आनुवंशिक रोगोंके उपचारका वैज्ञानिक तरीका भी नहीं माना जा सकता। लेकिन मनुष्य केवल डीएनए नहीं। उसके भीतर स्मृतियां हैं, भावनाएं हैं, रिश्ते, संस्कार हैं और जीवनको देखनेकी धारणाएं हैं। यदि किसी पारिवारिक दुखको समझने, स्वीकारने एवं उसके साथ स्वस्थ संबंध बनानेसे व्यक्तिके तनाव और व्यवहारमें सकारात्मक बदलाव आता है तो उसका प्रभाव मानसिक सेहतपर पड़ सकता है। इस तरह हीलिंगका अर्थ डीएनए बदलना नहीं, बल्कि अपने भीतर पीढ़ियोंसे चली आ रही भावनात्मक एवं व्यावहारिक धारणाएं पहचानना हो सकता है।

आजकल बच्चोंको अपने दादा-दादी और परदादा-परदादीकी कहानियांतक पता नहीं होतीं। ऐसे समयमें श्राद्ध हमें पूछनेका अवसर देता है-हम कहांसे आये हैं और आने वाली पीढ़ीको हम क्या देकर जायंगे। शायद तर्पण केवल अतीतको जल देनेका नाम नहीं। खुदमें कृतज्ञता जगानेका अवसर भी है। यह भी कि हम एक लम्बी जीवन-यात्राकी कड़ी हैं। शायद यही श्राद्धकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या है-पूर्वजोंको मुक्त करनेसे पहले अपने भीतर जमा भावनाओंको मुक्त करना। जब श्रद्धा भयसे निकलकर कृतज्ञता बनती है, तब श्राद्ध केवल एक कर्मकांड नहीं रहता। वह आत्मचिंतन बन जाता है, परिवारकी स्मृति बन जाता है और आने वाली पीढ़ीके प्रति हमारी जिम्मेदारीका स्मरण बन जाता है।



सृष्टिका नियम

❐ श्रीराम शर्मा

इस सृष्टिके कण-कणका विधान परमात्माके हाथमें है। उसे चाहे अटल नियम कहें। मनुष्यका निजका भी अपने भाग्य-विधानसे कुछ संबंध अवश्य है। इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता कि मनुष्य स्वाधीन नहीं है, उसका जीवन परमात्माके विधानके अनुसार ही चलता है। न्यायकी दृष्टिसे उसका विधान भी स्वतंत्र होना चाहिए। यह बात ठीक भी है। ईश्वरने कर्म फलका एक सुदृढ़ नियम बना दिया है, इसीके अनुसार मनुष्यका भाग्य बनता बिगड़ता है। भ्रम इस बातसे पैदा हो जाता है कि कई बार प्रत्यक्ष रूपसे कर्म करनेपर भी विपरीत परिणाम प्राप्त हो जाते हैं तो लोग उसे भाग्यचक्र मानकर परमात्माको दोष देने लगते हैं। किन्तु यह भाग्य तो अपने पूर्व संचित कर्मोंका ही परिणाम है। यहां मनुष्य जीवनके विराट रूपकी कल्पना की गयी है और एक जीवनका दूसरे जीवनसे संस्कारजन्य संबंध माना गया है। इस दृष्टिसे भी जिसे आज भाग्य कहकर पुकारते हैं, यह भी कलके अपने ही कर्मका परिणाम है। सृष्टिके प्राणियोंमें चेष्टा न हो तो अबतक जो ऐतिहासिक विकास हुआ है, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। भाग्यका रोना रोनेका अर्थ तो इतना ही समझमें आता है कि हम अपने कर्मके लिए सचेत नहीं हो पाये हैं। अपनी शक्तियोंका दुरुपयोग अब नहीं तो तब किया था, जिसका कट आघात भोगना पड़ रहा है, परन्तु प्राकृतिक विधानके अनुसार तो यह भाग्य अपनी ही रचना है। अपने ही किये हुए का प्रतिफल है। मनुष्य भाग्यके वशमें नहीं हो सकता, क्योंकि उसका निर्माता मनुष्य स्वयं है। परमात्माके न्यायमें अभेद देखें तो यही बात पुष्ट होती है कि भाग्य स्वयं हमारे द्वारा अपनेको संपन्न करता है, उसका स्वतंत्र अस्तित्व कुछ भी नहीं है। वास्तवमें हमें शिक्षा लेनी चाहिए कि कर्म फल किसी भी दशामें नष्ट नहीं होता। किसी न किसी समय वह अवश्य सामने आता है। विवशतावश उस समय उसे भले ही भाग्य कहकर टाल दिया जाय, परन्तु उससे कर्म फलका सिद्धांत तो नहीं मिट सकता। हम जैसा करेंगे वैसा ही तो भरेंगे। यदि स्वच्छापूर्वक परमात्मा ही जिसे जो जी चाहे देने लगे तो इस सृष्टिकी सारी न्याय, व्यवस्था बिगड़ जायगी। हम उस स्वतंत्रताको किस तरह काममें लगायें, यह एक अलग बात है, किन्तु अपना कल्याण करनेका अधिकार हमें ही है। न इसके लिए किसीको दोषी ठहराया जा सकता है और न किसीके भरोसे ही बैठा जा सकता है।

बसपाके लिए अस्तित्व बचानेका प्रश्न

❐ रोहित माहेश्वरी

बहुजन समाज पार्टीके सामने आज अपने अस्तित्वको बचानेका बड़ा संकट है। कांशीराम द्वारा स्थापित और मायावतीके नेतृत्वमें चार बार उत्तर प्रदेशकी सत्ता संभालने वाली यह पार्टी वर्तमानमें अपने सबसे कठिन दौरसे गुजर रही है। यूपीमें बसपाका मुख्य वोट बैंक खासकर दलित समुदाय तेजीसे खिसका है। २०२२ के विधानसभा चुनावमें पार्टीको सिर्फ एक सीट मिली और उसका वोट शेयर गिरकर लगभग १२.८ फीसदी रह गया। २०२४ के लोकसभा चुनावमें यूपीकी ८० सीटोंमेंसे बसपा एक भी सीट नहीं जीत सकी और उसका वोट शेयर घटकर ९.३९ फीसदीपर आ गया। गैर-जाटव दलित और अति पिछड़ी जातियां धीरे-धीरे भाजपाकी ओर आकर्षित हुई हैं, जबकि जाटव वोट बैंकका एक बड़ा हिस्सा इंडी गठबंधनकी तरफ स्थानांतरित हुआ है। जमीनपर बसपाके आन्दोलनों और आक्रामक राजनीतिकी कमीको भी इस गिरावटकी एक मुख्य वजह माना जाता है। जमीनी हालातों केस वाकिफ मायावती २००७ की तर्जपर दलित और अन्य सभी वर्गोंको साधकर अपना पुराना सामाजिक आधार और वोट बैंक वापस पानेकी कोशिश कर रही है। मायावतीने संकेत दिये हैं कि बसपा अगले विधानसभा चुनावमें उसी बहुजन सोशल इंजीनियरिंग मॉडलको अपनायेगी जिसे वह पहले भी अपनाती रही है। मायावतीकी रणनीति इन समुदायोंके बीच यह संदेश देन की है कि वे सिर्फ वोट बैंक नहीं हैं। वे सत्ता चलाने वाला वर्ग भी बन सकते हैं। बीएसपीपर मायावतीका हमेशा पूरा नियंत्रण रहा है, लेकिन पार्टीके मालिकाना हकको लेकर पारिवारिक कलह सामने आयी थी।

मायावतीने समय रहते स्थितिपर नियंत्रण पा लिया है। विधानसभा चुनावमें पहली बार मायावती अपने भतीजों आकाश और ईशान आनन्दके साथ मिलकर पार्टीके चुनाव प्रचारकी कमान संभालेंगी। बसपाके इतिहासमें ऐसा पहली बार होगा जब मायावतीका परिवार किसी चुनावमें एक साथ प्रचार मैदानमें उतरेगा। मायावतीने पार्टीसे निष्कासनके एक महीनेसे भी कम समयके भीतर आकाश आनन्दकी बसपामें वापसी करायी और उन्हें फिरसे राष्ट्रीय संयोजक नियुक्त कर दिया। आकाश इस बार विधानसभा चुनावोंतक पार्टीमें बने रहते हैं तो यूपीमें यह उनका पहला पूर्णकालिक चुनाव प्रचार अभियान होगा। आकाशने यूपीमें अबतक कोई चुनाव नहीं लड़ा है, जबकि छोटे भाई ईशान आनन्दको हालमें पार्ट